॥ श्रीहरिः ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्

सानुवाद, शाङ्करभाष्यसहित

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ-संख्या
१. शान्तिपाठ	....	११
शीक्षावल्ली		
प्रथम अनुवाक		
२. सम्बन्ध-भाष्य	....	१२
३. शीक्षावल्लीका शान्तिपाठ	....	१८
द्वितीय अनुवाक		
४. शीक्षाकी व्याख्या	....	२२
तृतीय अनुवाक		
५. पाँच प्रकारकी संहितोपासना	.....	२४
चतुर्थ अनुवाक		
६. श्री और बुद्धिकी कामनावालोंके लिये जप और होमसम्बन्धी मन्त्र ..		२९
पञ्चम अनुवाक		
७. व्याहृतिरूप ब्रह्मकी उपासना	.....	३५
षष्ठ अनुवाक		
८. ब्रह्मके साक्षात् उपलब्धिस्थान हृदयाकाशका वर्णन	.....	४१
सप्तम अनुवाक		
९. पाङ्क्तरूपसे ब्रह्मकी उपासना	.....	४७
अष्टम अनुवाक		
१०. ओङ्कारोपासनाका विधान	.....	५०
नवम अनुवाक		
११. ऋतादि शुभकर्मोंकी अवश्यकर्तव्यताका विधान	.....	५३
दशम अनुवाक		
१२. त्रिशङ्कुका वेदानुवचन	.....	५६
एकादश अनुवाक		
१३. वेदाध्ययनके अनन्तर शिष्यको आचार्यका उपदेश	.....	५९
१४. मोक्ष-साधनकी मीमांसा	.....	६७
द्वादश अनुवाक	.....	८०

विषय पृष्ठ-संख्या

ब्रह्मानन्दवल्ली

प्रथम अनुवाक

१५. ब्रह्मानन्दवल्लीका शान्तिपाठ ८१

१६. ब्रह्मज्ञानके फल, सृष्टिक्रम और अन्नमय कोशरूप पक्षीका वर्णन..... ८२

द्वितीय अनुवाक

१७. अन्नकी महिमा तथा प्राणमय कोशका वर्णन १०८

तृतीय अनुवाक

१८. प्राणकी महिमा और मनोमय कोशका वर्णन ११४

चतुर्थ अनुवाक

१९. मनोमय कोशकी महिमा तथा विज्ञानमय कोशका वर्णन १२१

पञ्चम अनुवाक

२०. विज्ञानकी महिमा तथा आनन्दमय कोशका वर्णन १२४

षष्ठ अनुवाक

२१. ब्रह्मको सत् और असत् जाननेवालोंका भेद, ब्रह्मज्ञ और अब्रह्मज्ञकी ब्रह्मप्राप्तिके विषयमें शङ्का तथा सम्पूर्ण प्रपञ्चरूपसे ब्रह्मके स्थित होनेका निरूपण १३२

सप्तम अनुवाक

२२. ब्रह्मकी सुकृतता एवं आनन्दरूपताका तथा ब्रह्मवेत्ताकी अभयप्राप्तिका वर्णन..... ..... १५३

अष्टम अनुवाक

२३. ब्रह्मानन्दके निरतिशयत्वकी मीमांसा.... ..... १६१

२४. ब्रह्मात्मैक्य-दृष्टिका उपसंहार १६८

नवम अनुवाक

२५. ब्रह्मानन्दका अनुभव करनेवाले विद्वान्‌की अभयप्राप्ति १८५

भृगुवल्ली

प्रथम अनुवाक

२६. भृगुका अपने पिता वरुणके पास जाकर ब्रह्मविद्याविषयक प्रश्न करना तथा वरुणका ब्रह्मोपदेश १९०

द्वितीय अनुवाक

२७. अन्न ही ब्रह्म है—ऐसा जानकर और उसमें ब्रह्मके लक्षण घटाकर भृगुका पुनः वरुणके पास आना और उसके उपदेशसे पुनः तप करना १९५

विषय		पृष्ठ-संख्या
तृतीय अनुवाक		
२८. प्राण ही ब्रह्म है—ऐसा जानकर और उसीमें ब्रह्मके लक्षण घटाकर भृगुका पुनः वरुणके पास आना और उसके उपदेशसे पुनः तप करना.	....	१९६
चतुर्थ अनुवाक		
२९. मन ही ब्रह्म है—ऐसा जानकर और उसमें ब्रह्मके लक्षण घटाकर भृगुका पुनः वरुणके पास आना और उसके उपदेशसे पुनः तप करना.	....	१९७
पञ्चम अनुवाक		
३०. विज्ञान ही ब्रह्म है—ऐसा जानकर और उसमें ब्रह्मके लक्षण घटाकर भृगुका पुनः वरुणके पास आना और उसके उपदेशसे पुनः तप करना	....	१९८
षष्ठ अनुवाक		
३१. आनन्द ही ब्रह्म है—ऐसा भृगुका निश्चय करना तथा इस भार्गवी वारुणी विद्याका महत्त्व और फल	....	१९८
सप्तम अनुवाक		
३२. अन्नकी निन्दा न करनारूप व्रत तथा शरीर और प्राणरूप अन्नब्रह्मके उपासकको प्राप्त होनेवाले फलका वर्णन	....	२०१
अष्टम अनुवाक		
३३. अन्नका त्याग न करनारूप व्रत तथा जल और ज्योतिरूप अन्नब्रह्मके उपासकको प्राप्त होनेवाले फलका वर्णन	....	२०२
नवम अनुवाक		
३४. अन्नसञ्चयरूप व्रत तथा पृथिवी और आकाशरूप अन्नब्रह्मके उपासकको प्राप्त होनेवाले फलका वर्णन	....	२०३
दशम अनुवाक		
३५. गृहागत अतिथिको आश्रय और अन्न देनेका विधान एवं उससे प्राप्त होनेवाला फल; तथा प्रकारान्तरसे ब्रह्मकी उपासनाका वर्णन	....	२०४
३६. आदित्य और देहोपाधिक चेतनकी एकता जाननेवाले उपासकको मिलनेवाला फल	....	२१४
३७. ब्रह्मवेत्ताद्वारा गाया जानेवाला साम......	....	२१७
३८. शान्तिपाठ	....	२२१